साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 7 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 17 सितंबर 2025 से 23 सितंबर 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

बढ़ती गर्मी से प्रजातियों के अस्तित्व का खतरा

नई दिल्ली। साल 2024 धरती के लिए एक ऐतिहासिक और चिंताजनक मोड़ साबित हुआ। यह साल अब तक का सबसे गर्म साल रहा और यह पिछले दशक का भी सबसे गर्म वर्ष था। वैज्ञानिक मानते हैं कि यह पिछले एक लाख सालों में सबसे गर्म साल भी हो सकता है। इस अभूतपूर्व तापमान ने केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि धरती पर मौजूद लाखों प्रजातियों के अस्तित्व पर भी गंभीर खतरा पैदा कर दिया है। इसी सवाल का उत्तर खोजने के लिए अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कनेक्टिकट (यूकॉन) के शोधकर्ताओं ने एक नई विधि विकसित की है, जिससे यह आकलन किया जा सकेगा कि कौन-सी प्रजातियां इस बढ़ती गर्मी की चपेट में हैं और भविष्य में किनके विलुप्त होने का खतरा सबसे अधिक है।

यूकॉन के इकोलॉजी और इवोल्यूशनरी बायोलॉजी विभाग के शोधकर्ता ने एक ऐसा उपकरण या टूल तैयार किया है, जिसे वे रैपिड क्लाइमेट बायोअसेसमेंट कहते हैं। इसका उद्देश्य पारंपरिक, धीमी और दशकों पीछे चल रही विधियों की जगह लेना है। यह उपकरण किसी भी प्रजाति के जलवायु चरम स्थितियों के संपर्क और उसके असर का तेजी से आकलन करता है। इस तकनीक को 2023 में विकसित किया गया और 2024 में इसका उपयोग दुनियाभर की 33,000 से अधिक कशेरुकी प्रजातियों पर किया गया। प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस में प्रकाशित अध्ययन से कई गंभीर तथ्य सामने आए, 2024 में हर छह में से एक प्रजाति ऐसे तापमान से गुजरी जो उसने अपने इतिहास में पहले कभी नहीं झेला था। 2023 में जिन प्रजातियों पर गर्मी का असर हुआ था, उनमें से

80 फीसदी प्रजातियां 2024 में भी प्रभावित हुई। शोधकर्ताओं को उम्मीद थी कि यह असर कभी यादृच्छिक या रैंडम होगा, यानी एक साल एक क्षेत्र प्रभावित होगा और अगले साल कोई दूसरा। लेकिन अध्ययन से पता चला कि बार-बार वही क्षेत्र और वही प्रजातियां गर्मी की मार झेल रही हैं। शोधकर्ता ने इसकी बुरे बंधक से तुलना करते हुए कहा कि जब लगातार एक ही प्रजाति और क्षेत्र को गर्मी झेलनी पड़ती है, तो यह दबाव समय के साथ बढ़ता चला जाता है। जैसे बैंक का ब्याज जुड़ता रहता है, वैसे ही हर गर्म साल प्रजातियों की सहनशक्ति पर नया बोझ डाल देता है। प्रजातियों को आराम या उबरने का समय नहीं मिल पाता और उनकी लचीलापन कम होता चला जाता है। नतीजतन विलुप्ति का खतरा और बढ़ जाता है। आज का जलवायु परिवर्तन इतिहास के किसी भी दौर से तेज हो रहा है। पहले प्रजातियां धीरे-धीरे अनुकूलन करके नई परिस्थितियों में टिक पाती थीं। लेकिन अब लगातार और तेजी से आ रही गर्मी प्रजातियों को उस समय का मौका ही नहीं दे रही। यदि किसी प्रजाति की आबादी बार-बार गिरती है और वह शून्य के करीब पहुंचती है, तो फिर उसका भविष्य बचाना असंभव हो जाता है। शोध में कहा गया है कि यह उपकरण केवल कशेरुकी प्रजातियों तक सीमित नहीं रहेगा। भविष्य में इसमें कीट-पतंगे और पौधे भी शामिल किए जाएंगे। शोधकर्ता हर साल की तरह एक सालाना रिपोर्ट जारी करने का लक्ष्य रखते हैं, जिसमें प्रजातियों की मौजूदा स्थिति और खतरे का आकलन होगा। उनका उद्देश्य यह है कि इस आंकड़े के आधार पर जमीनी स्तर पर कदम उठाए जा सकें, जैसे- चरम गर्मी के समय प्रजातियों को पानी और आश्रय उपलब्ध कराना। खाद्य संसाधन देना ताकि वे भूख से न मरें। संवेदनशील इलाकों में पहले से निगरानी और तैयारी करना। 2024 का साल स्पष्ट चेतावनी है कि अब समय हमारे हाथ से निकल रहा है। यह केवल एक साल की घटना नहीं है, बल्कि यह दिखाता है कि लगातार बढ़ती गर्मी कैसे धरती की जैव विविधता को कमजोर कर रही है। ोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि यह स्थिति बिल्कुल बैंक खाते जैसी है, अगर खाता शून्य हो गया तो फिर ब्याज दर का कोई मतलब नहीं रह जाता। उसी तरह, अगर प्रजातियां लगातार संकट झेलती रहीं और उनकी आबादी खत्म हो गई, तो उन्हें बचाना संभव नहीं होगा। इसलिए यह नई बायोअसेसमेंट तकनीक हमें न सिर्फ चेतावनी देती है, बल्कि हमें मौका भी देती है कि समय रहते कदम उठाएं और उन प्रजातियों को बचाएं जो इस धरती की प्राकृतिक धरोहर हैं।

महिला आत्मरक्षा प्रशिक्षण एवं रक्तदान शिविर से होगी सेवा पखवाड़े की शुरुआत

मंत्री श्री सारंग ने सेवा पखवाड़ा में होने वाले कार्यक्रमों की समीक्षा की

भोपाल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्म-दिवस 17 सितम्बर से लेकर महात्मा गांधी जयंती 2 अक्टूबर तक देशभर में सेवा पखवाड़ा मनाया जाएगा। इस अवसर पर खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा प्रदेश में विविध सेवा एवं जनहितकारी कार्यक्रम होंगे। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर इन कार्यक्रमों की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा पूरी गरिमा और सहभागिता के साथ मनाया जाना चाहिए, जिससे इसका लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँच सके।

सेवा पखवाड़े का शुभारंभ 17 सितम्बर को भोपाल स्थित तात्या टोपे स्टेडियम से होगा। इस दिन महिला आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाएगा। दो दिवसीय इस शिविर में स्कूली छात्राओं और महिलाओं को मार्शल आर्ट प्रशिक्षक आत्मरक्षा के गुर सिखाएँगे। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि बेटियों और महिलाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देना सेवा पखवाड़े की एक सार्थक शुरुआत है, जिससे वे किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना आत्मविश्वास और साहस के साथ कर सकेंगी। सेवा पखवाड़े के दौरान रक्तदान शिविर, वृद्धाश्रम में खिलाड़ियों द्वारा भोजन वितरण, अनाथालय के बच्चों का स्टेडियम भ्रमण, शासकीय अस्पतालों में सेवा कार्य और नमो मैराथन सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। दो अक्टूबर तक चलने वाले इन आयोजनों में समाज-सेवा और खेलों का समन्वय दिखाई देगा।

अपनी मातृभाषा के आधार पर, विश्वमंच पर सिरमौर बनेगा भारत-उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार

मप्र में यूनानी चिकित्सा पद्धति की पढ़ाई भी हिंदी भाषा में भी होगी

श्री परमार ने 100 वर्षों की प्रमुख घटनाओं पर, तत्समय प्रकाशित समाचारों पर केन्द्रित प्रदर्शनी का किया अवलोकन

रवीन्द्र भवन में दो दिवसीय भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान (सभ्यता, संस्कृति और अस्मिता का सूत्र) का शुभारंभ

भोपाल विश्व भर में अनेकों देश अपनी स्वंतत्रता के बाद, अपनी मातृभाषा के आधार पर विश्वमंच पर आगे बढ़ रहे हैं। हमें भी हीन भावना से मुक्त होकर स्वाभिमान के साथ, अपनी मातृभाषा के आधार पर विश्वमंच पर सिरमौर बनने की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता है।

इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा अध्यापन का महत्वपूर्ण अवसर दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा परिदृश्य में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। भारतीय शिक्षा पद्धति, ज्ञान आधारित शिक्षा पद्धति रही है, रटने की नहीं। हम, भारतीय दर्शन के अनुरूप ज्ञान आधारित शिक्षा देकर श्रेष्ठ नागरिक निर्माण करने की दिशा में सतत् क्रियाशील हैं। भारत वेश भूषा एवं भाषाओं की विविधताओं से परिपूर्ण देश है। हमारे पूर्वजों ने सांस्कृतिक व्यवस्था स्थापित करते हुए देश की एकात्मता को मजबूत किया, इसमें भाषाएं बाध्यता नहीं बनी। भाषाएं जोड़ने का काम करती हैं, तोड़ने का नहीं। भारत की सभी भाषाएं, भारत की अपनी भाषाएं हैं। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार रविवार को भोपाल स्थित रविन्द्र भवन के अंजनी सभागार में आयोजित दो दिवसीय भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान (सभ्यता, संस्कृति और अस्मिता का सूत्र) विमर्श कार्यक्रम का शुभारम्भ कर संबोधित कर रहे थे। श्री परमार ने सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दीं। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने एकात्मता के लिए भाषाई सौहार्दता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं की महत्ता के आलोक में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमने विद्यार्थियों को भारत की सभी भारतीय भाषाओं को सिखाने के लिए संकल्प लिया है, प्रत्येक विश्वविद्यालय आवंटित भारतीय भाषाएं सिखाएंगे, इससे विद्यार्थियों को अन्य राज्यों में रोजगार के अवसर प्राप्त होने पर संवाद में एकरूपता में सहजता होगी। हिंदी भाषी मध्यप्रदेश से, देश भर में भाषाई एकात्मता का संदेश जाएगा। श्री परमार ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेयी के संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी भाषा में दिए उद्बोधन का उल्लेख करते हुए, सभी से अपनी मातृभाषा में विचार व्यक्त करने का आह्वान किया। श्री परमार ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा हिंदी में इंजीनियरिंग एवं मेडिकल की पढ़ाई शुरू करने से विद्यार्थियों को स्वेच्छा एवं सुविधानुसार भाषा चयन का विकल्प दिया गया है। प्रदेश में यूनानी चिकित्सा पद्धति की पढ़ाई भी हिंदी भाषा में कराई जाएगी, इससे हिंदी भाषी विद्यार्थियों को इस आयुष विधा को पढ़ने का अवसर मिल सकेगा। श्री परमार ने भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़े विविध विषयों पर प्रकाश डालते हुए भारतीय पुरातन

ज्ञान के आलोक में अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं के आधार पर, विश्वमंच पर भारत पुनः विश्वगुरु बनेगा। स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत, विश्व का सबसे समृद्ध एवं विकसित देश होगा। वसुधैव कुटुंबकम् के दृष्टिकोण के साथ भारत विश्वमंच पर पुनः आगे बढ़ रहा है, कोविड के संकटकाल में लोककल्याण भाव से, अन्य देशों को वैक्सीन उपलब्ध करवाना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। श्री परमार ने कहा कि मातृभाषा को सर्वोच्च स्थान पर लाने के लिए गर्व के भाव के साथ व्यवहार में लाना होगा। मंत्री श्री परमार ने कहा कि इस दो दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों में भारतीय भाषाओं से जुड़े विविध विषयों पर विस्तृत विचार मंथन होगा और इस वैचारिक महाकुंभ से निकलने वाला अमृत भारत की भाषाई सौहार्दता में अपनी भूमिका सुनिश्चित करेगा। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने रवीन्द्र भवन परिसर में, देश में विगत 100 वर्षों घटित प्रमुख घटनाओं पर विभिन्न समाचार पत्रों में तत्समय प्रकाशित समाचारों के संकलन पर आधारित प्रदर्शनी सदी साक्षी है - 100 साल, 100 सुर्खियां कलम के सिपाही का अवलोकन भी किया। श्री परमार ने कहा कि इस प्रदर्शनी को विश्वविद्यालयों में भी स्थापित करेंगे, इससे विद्यार्थियों को भारतीय इतिहास से अवगत होने का अवसर मिलेगा।

कपास और रेशम उत्पादक किसानों की तकदीर बदल देगा पीएम मित्रा पार्क

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषि आधारित उद्योगों के प्रचार-प्रसार के लिए कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्स्य पालन विभाग द्वारा आपसी तालमेल से बहुउद्देशीय कृषि मेले आयोजित किए जाएं। इन मेलों में किसानों को उनकी फसल सहित अन्य सहायक उत्पादों के लाभयुक्त विक्रय एवं मार्केटिंग की जानकारियां भी दी जाएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि धार जिले के भैंसोला गांव में निर्मित हो रहे पीएम मित्रा पार्क से प्रदेश के कपास और रेशम उत्पादक किसानों की जीवन रेखा बदल जाएगी। उन्होंने कहा कि पीएम मित्रा पार्क से प्रदेश के 6 लाख से अधिक कपास उत्पादक किसानों को लाभ मिलने के साथ 1 लाख लोगों को प्रत्यक्ष एवं 2 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि पीएम मित्रा पार्क में निवेश करने के लिए बड़ी-बड़ी कंपनियों ने रुचि व्यक्त की है। जिस तेजी से पीएम मित्रा पार्क में निवेश के लिए कंपनियां आ रही हैं, यह हमें और बेहतर करने के लिए उत्साहित करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार की देर रात मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग की गतिविधियों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क बनने से मालवा क्षेत्र के किसानों द्वारा उत्पादित कपास की खपत लोकल लेवल पर ही हो जाएगी। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा और रॉ-मैटेरियल सप्लाई की एक पूरी चैन तैयार होगी। पीएम मित्रा पार्क प्रदेश के किसानों के लिए वरदान की तरह है। प्रदेश में निवेश करने के इच्छुक सभी निवेशकों का सरकार पलक पावड़े बिछाकर स्वागत करेगी। हम निवेशकों को सभी जरूरी मदद और सहयोग भी उपलब्ध कराऐंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सार्वजनिक/लोक उपक्रमों में निजी भागीदारी से ही देश का विकास संभव है। पीएम मित्रा पार्क में निवेशकों द्वारा किए जाने वाले पूंजी निवेश से जितनी उच्च कोटि के परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं, हर संभव प्रयास कर हम यह करके दिखाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीएम मित्रा पार्क का प्रचार-प्रसार इस तरह किया जाए कि प्रदेश में मौजूद सभी प्रकार के कृषि आधारित उद्योग को भी भरपूर प्रोत्साहन मिले। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में कुल 7 पीएम मित्रा पार्क मंजूर किए गए हैं। जहां दूसरे राज्य पीएम मित्रा पार्क की स्थापना के लिए प्राथमिक तैयारियां ही कर रहे हैं, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से हमारी सरकार 17 सितंबर को धार जिले के भैंसोला गांव में देश के पहले और सबसे बड़े पीएम मित्रा पार्क का भूमिपूजन कराने जा रही है। उन्होंने कहा कि हम इसे देश का मॉडल पीएम मित्रा पार्क बनायेंगे।

युवाओं के लिए हर क्षेत्र में हैं अवसर और संभावनाएं - उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

नेशन बिल्डर अवॉर्ड समारोह में हुए शामिल

भोपाल उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। आज हर क्षेत्र में संभावनाएं हैं, अवसर हैं। इन अवसरों का लाभ लेने के लिए आवश्यक है कि युवा सजग हों और मनोयोग से मेहनत करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विशेष रूप से युवा पीढ़ी से नशे से दूर रहने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास का सुनहरा फल युवाओं को मिले, इसके लिए आवश्यक है कि वे नशे से दूरी बनाकर अपनी ऊर्जा सकारात्मक दिशा में लगाएँ। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मीडिया से आग्रह किया कि नशे के दुष्परिणामों पर जनजागरूकता अभियान चलाएँ। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल आनंद मोहन माथुर सभागृह, इंदौर में निजी मीडिया समूह के 12वें नेशन बिल्डर अवॉर्ड 2025 समारोह में शामिल हुए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश ने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। राज्य को कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त होना इसका प्रमाण है। सिंचाई के क्षेत्र में भी लगातार वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि इंदौर की स्वच्छता पूरे देश के लिए एक मिसाल बन चुकी है और प्रदेश विकास की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने शिक्षा, प्रशासनिक सेवा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को सम्मानित किया। महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, सुप्रसिद्ध सिने तारिका एवं पूर्व सांसद श्रीमती जया प्रदा, आयोजक श्री वीरेंद्र मिश्रा सहित नागरिक उपस्थित रहे। श्रीमती जया प्रदा ने इंदौर की स्वच्छता की सराहना की।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों तक पहुंचेगी महेश्वर-मांडू की पहचान

मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड की पहल- दिल्ली के 30 से अधिक अनुभवी गाइड्स प्रदेश के धरोहरों का कर रहे अध्ययन

भोपाल मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा प्रदेश के विश्वस्तरीय पर्यटन अनुभवों को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के बीच महेश्वर एवं मांडू जैसे ऐतिहासिक स्थलों को प्रमुखता से स्थापित करने के उद्देश्य से क्षेत्रीय पर्यटक गाइड संघ (आरटीजीए) दिल्ली का एक अध्ययन दौरा एवं प्रोफेशनल वर्कशॉप का आयोजन किया जा रहा है। इस यात्रा में 30 से अधिक अनुभवी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमाणित गाइड्स भाग ले रहे हैं, जो भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। इस ट्रिप में शामिल गाइड्स कई अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में निपुण हैं। दिल्ली लौटने के बाद वे विदेशी पर्यटकों को भोपाल, मांडू और महेश्वर के पर्यटन स्थलों से परिचित कराएंगे, जिससे इन धरोहर स्थलों की वैश्विक पहचान मजबूत होगी।

पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में हम धरोहर संरक्षण और पर्यटन विकास को साथ लेकर चल रहे हैं, जिससे मध्यप्रदेश को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अग्रणी स्थान दिलाया जा सके। इस भ्रमण कार्यक्रम के माध्यम से अनुभवी गाइड्स जब इन स्थलों की गहराई से जानकारी लेकर इन्हें अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों तक पहुंचाएंगे, तो निश्चित ही प्रदेश का पर्यटन और अधिक सशक्त होगा। अपर मुख्य सचिव पर्यटन, संस्कृति, गृह एवं धार्मिक न्यास तथा धर्मस्व और प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि महेश्वर और मांडू जैसे धरोहर स्थल मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के अनमोल रत्न हैं। आरटीजीए दिल्ली के अनुभवी गाइड्स जब इन स्थलों का गहराई से अध्ययन करेंगे, तो वे इन्हें और प्रभावशाली तरीके से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के बीच प्रस्तुत कर पाएंगे। यह पहल प्रदेश के पर्यटन को वैश्विक पहचान दिलाने और मध्यप्रदेश को भारत का प्रमुख हेरिटेज डेस्टिनेशन बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगी। अध्ययन दौरे की शुरूआत 14 सितंबर को आरटीजीए के प्रतिनिधियों के दिल्ली से भोपाल आगमन के साथ हुई। उन्होंने भोपाल में ताजङ्कउलङ्कमस्जिद, कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर, बिरला म्युजियम और भारत भवन का भ्रमण किया। सोमवार, 15 सितंबर को प्रतिनिधि मांडू के लिए रवाना हुए। मांडू पहुंचकर उन्होंने रानी रूपमति महल, बाज बहादुर महल, जहाज महल, होशंगशाह का मकबरा, नीलकंठ महादेव मंदिर आदि का भ्रमण किया। मंगलवार, 16 सितंबर को वे मांडू से महेश्वर के लिए प्रस्थान करेंगे। महेश्वर में प्रतिनिधि अहिल्या फोर्ट, घाटों, होम स्टे, पर्यटक सुविधा केंद्र आदि प्रमुख पर्यटन स्थलों का अवलोकन करेंगे। 18 सितंबर को सभी प्रतिनिधि दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगे। पुरातत्व विभाग के उपसंचालक श्री प्रकाश परांजपे, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सब-कनज़र्वेशन ऑफिसर श्री प्रशांत पाटनकर तथा पुरातत्वविद् डॉ. देवी प्रसाद पांडे ने प्रतिनिधियों को प्रदेश की धरोहरों की ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक महत्ता पर विस्तृत जानकारी प्रदान कर रहे हैं। क्षेत्रीय पर्यटक गाइड संघ (आरटीजीए) दिल्ली, देश का सबसे बड़ा पंजीकृत संगठन है, जिसके सदस्य विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में दक्ष हैं और नियमित रूप से विदेशी पर्यटकों, उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडलों तथा वीआईपी यात्रियों के साथ कार्य करते हैं। ये गाइड्स पर्यटकों के सबसे नजदीक रहते हुए न केवल इतिहास बताते हैं, बल्कि भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय झलकियों को भी साझा करते हैं, जिससे अतुलनीय भारत की पहचान और मजबूत होती है।

जलवायु परिवर्तन से फसलों की पैदावार में बढ़ रही अस्थिरता, किसानों पर पड़ेगी मार

मुंबई। यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया से जुड़े वैज्ञानिकों के नेतृत्व में किए एक नए वैश्विक अध्ययन से पता चला है कि बढ़ती गर्मी और सूखे ने खाद्य उत्पादन को अस्थिर बना दिया है। साल-दर-साल अनाज की पैदावार में बड़े उतार-चढ़ाव आम हो गए हैं। इसका असर सिर्फ कीमतों पर नहीं, बल्कि खाद्य सुरक्षा और आर्थिक मोर्चे पर भी पड़ रहा है। स्टडी से पता चला है कि बढ़ती गर्मी और सूखे से फसलों की पैदावार अस्थिर हो रही है और साल-दर-साल पैदावार में ज्यादा उतार-चढ़ाव आ रहे हैं। देखा जाए तो कुछ के लिए इसके मायने यह हैं कि उनके बर्गर महंगे हो सकते हैं, तो दूसरों के लिए यह आर्थिक तंगी और भुखमरी का कारण बन सकता है।

इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने दुनिया की तीन अहम फसलों मकई, सोयाबीन और ज्वार की पैदावार में साल-दर-साल आ रहे बदलाव पर प्रकाश डाला है। वैज्ञानिकों ने खुलासा किया है कि वैश्विक तापमान हर डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ मकई की पैदावार में सात फीसदी, सोयाबीन में 19 फीसदी और ज्वार में 10 फीसदी की अस्थिरता बढ़ जाती है। किसानों के लिए यह बदलाव महज आंकड़े नहीं हैं। एक बुरा साल उनके लिए परिवार की खुशहाली और बर्बादी के बीच का फर्क पैदा कर सकता है। वहीं अगर तापमान सिर्फ दो डिग्री सेल्सियस बढ़ता है, तो जो सोयाबीन की फसलें पहले सदी में एक बार खराब होती थीं, वे हर 25 साल में बर्बाद हो सकती हैं। मकई हर 49 साल और ज्वार की फसल हर 54 साल में विफलता का सामना कर सकती है। वहीं अगर उत्सर्जन पर लगाम न लगाई गई और वो इसी तरह बढ़ता रहा तो परिणाम कहीं ज्यादा गंभीर हो सकते हैं। अनुमान है कि सदी के अंत तक सोयाबीन की फसलें हर 8 साल में बर्बादी

का शिकार हो सकती हैं। अध्ययन से जुड़े शोधकर्ता डॉक्टर जोनाथन प्रॉक्टर का प्रेस विज्ञप्ति में कहना है, किसान औसत पैदावार पर नहीं बल्कि हर साल होने वाली कटाई पर जीते हैं। एक खराब साल उनके लिए गंभीर आर्थिक नुकसान और भूख का कारण बन सकता है। वैज्ञानिकों ने अध्ययन में इस बात की भी पुष्टि की है कि इससे सबसे अधिक खतरे में वे क्षेत्र हैं, जो बारिश पर निर्भर हैं और जिनके पास पर्याप्त वित्तीय सुरक्षा नहीं है। इन क्षेत्रों में सब-सहारा अफ्रीका, सेंट्रल अमेरिका और दक्षिण एशियाई देश शामिल हैं। लेकिन इसका असर केवल कमजोर देशों तक ही सीमित नहीं है। उदाहरण के लिए, 2012 में अमेरिका के मिडवेस्ट में सूखे और लू के चलते मकई और सोयाबीन की पैदावार में 20 फीसदी की गिरावट आ गई थी, जिससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को अरबों डॉलर का नुकसान हुआ। साथ ही इसकी वजह से वैश्विक बाजार में खाद्य कीमतें 10 फीसदी तक बढ़ गईं। स्पष्ट है कि फसलों में आई अस्थिरता का असर दुनिया भर के बाजारों पर पड़ता है। डॉक्टर प्रॉक्टर का कहना है, हर कोई फसलें नहीं उगाता, लेकिन हर किसी को खाना चाहिए। ऐसे में जब पैदावार अस्थिर होगी, तो इसका असर हर किसी पर पड़ेगा। अपने अध्ययन में वैज्ञानिकों ने फसलों के रिकॉर्ड के साथ तापमान और मिट्टी की नमी का भी विश्लेषण किया है। उनके अनुसार, इस अस्थिरता का मुख्य कारण गर्म और सूखी परिस्थितियों का एक साथ होना है। गर्म मौसम मिट्टी को सुखा देता है, सूखी मिट्टी तापमान और लू की आशंका को और बढ़ा देती है। थोड़े समय के लिए भी गर्म और सूखा मौसम फसल को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इससे पौधों के परागण पर असर पड़ता है, नतीजन वृद्धि का समय घट जाता है और पौधे कमजोर हो जाते हैं। अध्ययन में इस बात पर भी प्रकाश डाला है, जहां सिंचाई की सुविधा है, वहां अस्थिरता कम हो सकती है। लेकिन जो क्षेत्र सबसे ज्यादा जोखिम में हैं वहां या तो पानी की कमी है या सिंचाई के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा नहीं है। ऐसे में वैज्ञानिकों का सुझाव है कि इससे बचने के लिए गर्मी और सूखा प्रतिरोधी फसलों के साथ मौसम का सटीक पूर्वानुमान, मिट्टी का उचित प्रबंधन और मजबूत वित्तिय सुरक्षा जाल जैसे फसल बीमा में निवेश जरूरी है। हालांकि उनके मुताबिक इसका सबसे भरोसेमंद उपाय ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए उत्सर्जन को कम करना है।

पेरू में पुरातत्वविदों ने खोजा 3800 साल पुराना प्राचीन शहर, 18 संरचनाएं मिलीं

लीमा दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में पुरातत्वविदों ने प्राचीन शहर की खोज की है। पेरू की रेगिस्तानी पहाड़ियों पर 3,800 साल पुराने शहर की खोज पुरानी मान्यताओं को तोड़ रही है। पेरू की सुपे घाटी में ये खोज हुई है। यहां की मिट्टी की दीवारें और रेगिस्तान से उठती गर्मी में इसकी कल्पना करना कठिन है कि यह कभी महान सभ्यताओं में से एक थी। हजारों साल रेगिस्तान के नीचे दबे रहे इस शहर की नई खोज अमेरिका के इतिहास को फिर से लिख रही है।

इस साल जुलाई में पेरू की पुरातत्वविद् डॉक्टर रूथ शैडी ने प्राचीन कैरल सभ्यता के 3,800 साल पुराने शहर पेनिको को दुनिया के सामने पेश किया। इस स्थल में 18 संरचनाएं हैं, जिसमें मंदिर और आवासीय परिसर शामिल हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह इस बात के नए प्रमाण प्रदान करता है कि कैरल लोगों ने जलवायु आपदाओं के साथ तालमेल बैठाया। पेनिको कैरल सभ्यता के संघर्ष-रहित जीवन के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है।यह दुनिया के सबसे प्राचीन और शांतिपूर्ण समाजों में से एक था। कैरल सभ्यता 5,000 साल पहले दुनिया के दूसरी ओर मेसोपोटामिया और मिस्र के शुरुआती शहरी केंद्रों के साथ ही फली-फूली थी। शैडी का कहना है कि कैरल में 3000 ईसा पूर्व से 1800 ईसा पूर्व तक लोग रहते थे।शैडी के निष्कर्षों के अनुसार, कैरल में

3,000 लोग रहते थे। यहां आसपास के कई छोटे गांव भी थे। सुपे घाटी की रणनीतिक स्थिति प्रशांत तट को उपजाऊ एंडियन घाटियों और सुदूर अमेजन से जोड़ती थी। इससे सांस्कृतिक और व्यावसायिक आदान-प्रदान का एक नेटवर्क बन गया था। कैरल लोग कपास, शकरकंद, स्क्वैश, फल और मिर्च उगाते थे। ये पहाड़ों से खनिजों का व्यापार करते थे। गिलहरी और बंदर इनके पालतू जानवर थे।कैराल की वास्तुकला और दूसरे आर्ट काफी विकसित थे। शहर का एम्फीथिएटर भूकंपरोधी था। इसे प्रशांत क्षेत्र के सबसे शक्तिशाली भूकंपों को झेलने के लिए तैयार किया था। इसमें बड़े संगीत समारोहों के लिए एक अद्वितीय ध्वनिक डिजाइन था। यहां से 32 अनुप्रस्थ बांसुरी मिली हैं। यह पेलिकन की हड्डियों से बनी हैं। शैडी ने बताया कि इन वाद्ययंत्रों से यहां के लोग तट, पहाड़ों और जंगल के लोगों का अनुष्ठानों और समारोहों में स्वागत करते थे। इस सभ्यता के पतन के बारे में माना जाता है कि अपनी सामाजिक सफलता के बावजूद इसे कठिन चुनौती का सामना करना पड़ा। ये चुनौती जलवायु के बदलाव की वजह से बना। करीब 4,000 साल पहले वर्षों का सूखा एक व्यापक वैश्विक बदलाव की वजह बना। शैडी कहती हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण कैरल में नदियां और खेत सूख गए। उन्हें शहरी केंद्रों को छोड़ना पड़ा और बड़ी संख्या में लोग मारे गए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008